आपबीती

निश्चय

चैताली हालदार

आज बहुत बारिश हो रही है। रास्ता कीचड़ से भरा है, चलना मुश्किल है। बिजली भी नहीं है। मेहर काम से लौट रही है। उसकी धीमी चाल और चेहरे की झुर्रियों में सारे दिन की थकान सिमट आई है।

कभी-कभी मेहर को अपनी ज़िंदगी पर बहुत गुस्सा आता है। काम जैसे खत्म ही नहीं होता। हर पल मर-मर कर जीना! वह हताश होकर खड़ी हो जाती है।

"क्या हुआ मेहर! खड़ी क्यों हो गई? पैर जल्दी चला। इरफान के पापा के घर आने का टैम हो रहा है। आकर देखेगा कि मैं अभी तक वापस नहीं पहुंची तो हंगामा खड़ा कर देगा", रुखसार बाजी की आवाज़ कान में पहुंचते ही मेहर चौंकी।

सच में, रुखसार बाजी को दाद देनी पड़ेगी। इतनी मुश्किलों के बावजूद कभी मायूस नहीं होती। लगातार मशीन की तरह चलती रहती है। आप सोच रहे होंगे चौबीस घंटे कोई कैसे खट सकता है? रात में तो ज़रूर आराम से सोती होगी। पर आराम इस औरत के नसीब में कहां है। आठ-आठ बच्चों को पालना, सभी की फरमाईशें पूरी करना। आधा पेट खाना पति की मार-पिटाई और ऊपर से उधार की समस्या। बेटियों के शादी का खर्च सम्भालने के लिये उधार, बेटों की पढ़ाई के लिये उधार, घर पक्का बनाने के लिये उधार, पति की नशे के कारण उधार ..... आज जब थोड़ा आराम करने का उम्र आयी है तब फैक्टरी में काम करने के लिए जाना पड़ रहा है। आखिर उधार भी चुकाना है न।

मेहर ने प्यार से रुखसार बाजी को देखा। सोचा जवानी में बाजी कितनी सुंदर रही होंगी। प्यार और देखरेख की कमी ने इस पैंतालीस साल की औरत को साठ साल की बुढ़िया बना दिया है। चिढ़चिढ़ी भी बहुत हो गई है। पानी की लाईन में अगर बाजी साथ हो तो पानी जल्दी मिल जाता है। बाजी कहती है, यह जंगल है। जिसकी ताकत ज़्यादा उसी का ही राज चलता है। चुप रहोगे तो चारों तरफ से लोग तुम्हारे ऊपर धौंस जमाने लगेंगे।

"चल घर जा। कल सुबह जल्दी तैयार हो जाना। आज लेट हो गए थे। फालतू बस में पैसे लगाने पड़े। कल पैदल जाएंगे। नहीं तो महीने का हिसाब गड़बड़ हो जाएगा।" बाजी की आवाज़ में गुस्से के साथ प्यार और फ्रिक भी थी।

"हां कल मैं जल्दी तैयार हो जाऊंगी।" विश्वास दिलाती है मेहर।

घर के दरवाज़े तक पहुंचते ही मेहर को पता लग गया कि आज की रात साधारण रातों जैसी नहीं है। घर में नाली का पानी घुस गया है। मेहर की तीसरी बेटी असगरी घर से पानी निकालकर बाहर फेंक रही है।। अभी तक चूल्हा नहीं जला। आमतौर पर मेहर के घर आते-आते सब्ज़ी कट जाती है व आटा गूंध जाता है।

"अम्मा देखो ना क्या हो गया! फिर से घर में गंदा पानी घुस गया है।"

मेहर को गुस्सा आ रहा है। एक तो नाली भरी हुई है, ऊपर से हरामज़ादी साजदा सारा कूड़ा नाली में ही फेंकती है।

"यहां तो लोगों को रहने का कोई तरीका ही नहीं है। न खुद साफ़ रहना जानते हैं और न दूसरे को ठीक से जीने देते हैं।" ऊंची आवाज़ में दरवाज़े के सामने खड़ी होकर मेहर चिल्लाई।

"अच्छा! तेरी बेटियों को पूछ कि वह कहां फेंकती है कूड़ा? तेरे दरवाज़े के सामने जो वह चिप्स का लिफाफा पड़ा है वह किसने फेंका? पहले अपना घर सम्भाल फिर दूसरों को सिखाना।" साजदा अपने घर के अंदर से चिल्लाई।

"तुझे क्यों बुरा लग रहा है? मैंने तुझे कुछ कहा क्या? जिसके मन में चोर होता है वह ही अपने आपको बचाने की कोशिश करता है।" जबाव का इंतज़ार न करके मेहर घर के अंदर चली गई।

साजदा बोलती चली गयी। मेहर ने कोई जबाव नहीं

दिया। शनिवार को संस्था वाली दीदी आएगी। तब उन्हें सब कुछ बताऊंगी। मन ही मन में तय किया मेहर ने।

रोज़ ही गली में कुछ न कुछ होता है। लड़ाई झगड़ा तो लगा ही रहता है। कभी पानी की लाईन में, तो कभी शौचालय में, कभी घर के अंदर, तो कभी घर के बाहर। झगड़ा करना मेहर को बिल्कुल पसंद नहीं है। पर यहां रहने के लिये झगड़ा तो करना ही पड़ता है। नहीं तो ज़िंदगी नरक बन जाएगी।

यह सोचकर तो गांव से शहर नहीं आयी थी मेहर। पहले पहले सब कुछ बहुत अजीब लगता था। यह शौचालय की लाईन, पानी की लाईन, राशन की लाईन, बच्चों को स्कूल में दाखिल करवाने के लिये भागा-दौड़ी। हज़ारों झमेले। राशन कार्ड चाहिए तो दफ्तर भागते रहो। अगर मिल गया तो कार्ड काम में आयेगा या नहीं, राशन मिलेगा या नहीं, पता नहीं।

"हज़ारों झंझट हैं। पर एक बात तो है। इन सारे झमेलों से हमें प्यार भी तो है। हम कुछ करते ही नहीं", साजदा बड़बड़ा रही थी।

"तू कब मेरे पीछे-पीछे घर तक आ गई," चिड़कर बोली मेहर।

"पहले मेरी बात का जबाव दे। ऐसा क्या करें कि रोज़ के इस झमेले से छुटकारा मिल जाए?" सवाल किया साजदा ने।

"थोड़ी मुश्किल तो है। पर तुम लोग चाहो तो शायद कुछ समस्याएं कम हो सकती हैं। अगर तुम लोग एक हो जाओ। एक दूसरे का साथ दो तो।" मेहर ने दरवाज़े पर खड़ी दीदी को देखा। फिर साजदा की ओर। उधर साजदा भी जैसे कुछ निश्चय कर चुकी थी। दोनों ने आंखों ही आंखों में जैसे कुछ करने का इरादा कर लिया था।

चैताली हालदार *जागोरी की एक्शन रिसर्च टीम से जुड़ी हैं।*